साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
रवीन्द्र भवन, 35 फीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : +91-11-23386626-28, फैक्स : +91-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi–110001
Phone: +91-11-23386626-28, Fax: +91-11-23382428
E-mail: secretary@sahitya-akademi.gov.in
Website: http://www.sahitya-akademi.gov.in

परिसंवाद – नदी संस्कृति और भारतीय साहित्य

शनिवार, 27 अक्तूबर 2018, इंदौर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर के संयुक्त तत्वावधान "नदी संस्कृति और भारतीय साहित्य" विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 27 अक्तूबर 2018 को किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी, प्रधानमंत्री, श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर ने की। बीज वक्तव्य डॉ. श्रीराम परिहार, सदस्य, हिन्दी परामर्श मंडल, साहित्य अकादमी ने दिया। उन्होंने कहा कि अर्वाचीन साहित्य में नदी रूपक बनकर आई है। लेकिन पुरातन समय में वर्णन वेदों में विष्णु पुराण–वायु पुराण में आकशगंगा का वर्णन मिलता है। नदियों के जो उद्गम है वह केवल मिट्टी की कोख से नहीं होते। नदी का संबंध पशु–पक्षियों से लेकर आस–पास की प्रकृति और समाज से भी होता है। नदी हमारी सहोदरा हुई। धरती की इन बेटियों की रक्षा करने का दायित्व उसी दिन से हमारे जीवन में जुड़ गया।नदी प्राणदायिनी है। समय के परिवर्तन के कारण नदी को दोहन का साधन मान लिया गया।सारी सभ्यताएं नदियों के किनारे विकसित हुई। नदी को बचाने का संकल्प हमारी संस्कृति में है। यदि नदी का जल हमारे भीतर नहीं होता तो ये प्रार्थनाएं इतनी उदात्त नहीं होती। नदी निर्जीव नहीं है।

प्रो. सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि जीवन का जल से और जल का साहित्य से अटूट सम्बन्ध है। जीवन नदी की कल–कल धारा की तरह है। विश्व के सभी प्रमुख नगर व सभ्यताएं नदियों के किनारे ही बसी व विकसित हुई। इसलिए जब नदी दूषित होती है तो जीवन भी दूषित होता है और इसके जरिए साहित्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमें नदियों को साफ करने पर करोड़ों रुपये खर्च करने के साथ यह जिम्मेदारी भी लेना चाहिए कि हम स्वयं नदियों का गंदा न करें। सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी सहायक संपादक अजय कुमार शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों के बारें में विस्तार से बताया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरुष ने की तथा डॉ. उषा उपाध्याय, डॉ. विश्वास पाटिल एवं सुश्री रश्मि रमानी जी ने अपने आलेखों का वाचन किया। डॉ. उषा उपाध्याय ने गुजराती साहित्य में नदी संस्कृति पर बात करते हुए वहाँ के प्रमुख लेखकों के कई उदाहरण देकर समझाया कि नदी गुजराती साहित्य और संस्कृति में हमेशा से महत्त्वपूर्ण रही है। उन्होंने काका कालकेकर जी की पुस्तक सप्त सरिता का उल्लेख करते हुए कहा कि हिमालय की करीब 2000 किमी की यात्रा करने वाले काका कालेकर ने इसमें वहां की कई नदियों का मनोरम वर्णन किया है। सिंधी की प्रख्यात रचनाकार और अनुवादिका सुश्री रश्मि रमानी जी ने कहा कि हर देश को अपनी संस्कृति पर गर्व होता है। भारत विश्व में हर सभ्यता का युग प्रवर्तक रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता प्राचीन, निराली और सम्पन्न रही है। सैंधव संस्कृति सांस्कृतिक सहिष्णुता में विश्वास रखती थी। मिस्त्र को नील नदी की देन कहा जाता है, उसी प्रकार सिंधु प्रदेश को सिंधु नदी की देन कहा जाता है। मराठी के प्रख्यात साहित्यकार डॉ. विश्वास

पाटिल जी ने मराठी साहित्य में नदी संस्कृति का वर्णन करते हुए कहा कि इस देश में हमने नदी को मात्र पानी की धारा नहीं माना वरन् वह हमारे लिए विराट आस्था का प्रतीक रही है।

राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरुष जी ने नदी की व्यापकता को चिन्हित करते हुए कहा कि नदियों के तट पर केवल मंदिर ही बल्कि सामाजिक एकता की मिसालें भी वहीं बनी। नदी सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध रही यह प्रतीक हमारे समाज में समानता का सबसे अद्‌भुत उदाहरण है। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. श्रीराम परिहार ने की तथा डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरुष और श्री गोविन्दकुमार गुंजन ने आलेख पाठ किया। श्री गुंजन ने कहा कि भारत की तरह ही दुनिया की अन्य लोक संस्कृतियों ने नदियों को बहुत सम्मान दिया है। हम लोगों ने नदियों की पूजा की, लेकिन हमने सारी गंदगी पूजा के नाम पर नदियों को अर्पित कर दी। नदियां मरती चली जा रही है। नदी की कल–कल करती ध्वनि का जो प्रवाह है वह हमने समाप्त कर दिया है। जिस दिन नदी का यह कल–कल नाद रुक जाएगा, उस दिन जीवन की कल्पना करना भी असंभव सा लगता है। जल है तो जीवन है, संस्कृति है, साहित्य है। जब हम नदी संस्कृति की बात करते हैं तो केवल नदियों की गाथा नहीं गाते बल्कि वहां की संस्कृति, आदिवासी जन–जीवन इत्यादि विषयों पर चर्चा करते हैं। भारतीय साहित्य नदियों का अभिनन्दन करने वाला साहित्य है। आधुनिक साहित्य में भी हमारे चिंतकों ने बहुत गहराई से नदियों का जिक किया है।

अंत में डॉ. परिहार ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि हमारा साहित्य वेदों का साहित्य है। जिन दो महान् ग्रंथों ने सम्पूर्ण जनमानस को प्रभावित किया है, वह है रामायण और महाभारत। सरस्वती नदी को हम भौतिक रूप से ढूँढ रहे हैं, लेकिन वह तो हमारे अंतः मन में वर्षों से प्रवाहित हो रही है। उनका कहना है कि गांव का उत्पाद गांव में रहेगा तो गांव आत्मनिर्भर रहेगा। तीनों सत्रो का संचालन वीणा के सम्पादक श्री राकेश शर्मा ने किया और अंत में आभार अकादेमी के सहा. संपादक अजय कुमार शर्मा ने व्यक्त किया।